OM-5 -2020 YOG ISSUE FINAL_Page 1 and 2 03/06/2020 8:48 PM Page 11

त्याग, तपस्या और भाग्य

एक है त्याग, दूसरा है त्याग वृत्ति। इसमें भी थोड़ा अन्तर है। कई बार हम ऐसी लहर में होते हैं, योग अभ्यास करते हैं उसके बाद स्थिति अच्छी रहती है। बाबा किसी विशेष बात का त्याग करने के लिये कहते हैं तो हम कर देते हैं। हम ये शरीर नहीं, आत्मा हैं। हम क्षेत्र नहीं, क्षेत्रज्ञ हैं – इन बातों को हम भली-भांति समझने के बाद पुरुषार्थ शुरु कर देते हैं। बाबा हमेशा कहते हैं- त्याग से भाग्य होता है। आमतौर पर लोग कहते हैं कि कर्म से भाग्य बनता है।

कोई व्यक्ति लक्की है तो हम कहते हैं कि इसके पूर्व कर्म अच्छे हैं। यह तो ठीक है- कर्मों की गति हमें बताई जाती है, लेकिन एक मुरली में बाबा ने कहा था कि जो संकल्प, मन, वचन, कर्म और स्वप्न में भी न हो और वह हमें प्राप्त हो जाये, उसको भाग्य कहते हैं। हमने कोई कर्म किया, उसका फल हमें मिला, वह कर्म का फल है। ऐसे तो भाग्य भी कर्म का ही फल है। त्याग भी एक कर्म ही है। विशेष प्रकार के त्याग को भी हम कर्म कहते हैं। लेकिन फिर बाबा यह ख़ासतौर पर क्यों कहते हैं कि त्याग से भाग्य बनता है? अवश्य ही त्याग भी बाकी सब कर्मों से अलग एक विशेष प्रकार का कर्म है, जिससे विशेष भाग्य बनता है। कई बार हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति ज़्यादा मेहनत तो करता नहीं, फल उसको मिलता है। आगे बढ़ता है, उसकी उन्नति होती जाती है और उसको चान्सेस मिलते जाते हैं, सफलता प्राप्त होती जाती है तो हम क्या कहते हैं कि यह बड़ा लक्की है, भाग्यशाली है। तो उसके पीछे कभी-न-कभी, किसी-न-किसी रूप में त्याग ज़रूर रहा होता है। हम जो कर्म करते हैं, हमारे हरेक कर्म के पीछे त्याग की भावना समाई हुई हो, कर्म को हमने त्याग का पुट दिया हुआ हो तो वही कर्म कई गुना फलदायक हो जाता है। यह तो एक सिद्धान्त है कि जैसा बीज बोयेंगे वैसा फल काटेंगे। कर्म का फल शाश्वत है, अटल है, जिसको कर्म का सिद्धान्त कहते हैं। लेकिन जिस कर्म में त्याग की भावना होगी, दूसरे को सुख देने की भावना होगी, दातापन की क्वालिटी होगी, अपने स्वार्थ से नहीं किया गया होगा, अपने समय को, शक्ति को, धन को, शरीर को लगाकर दूसरे को सुख देने का, उसके जीवन को बनाने की भावना, शुभ चिन्तन, शुभ भावना, शुभ कामना समाई हुई होगी वह कर्म होगा। तो कर्म करो, पुरुषार्थ करो लेकिन कर्म

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

के साथ त्याग वृत्ति हो। यह नहीं कि मैंने इतना कर्म किया है, मेरी कोई प्रशंसा ही नहीं करता, मैंने इतना कुछ किया है उसके लिये मुझे कोई पद ही प्राप्त नहीं होता, लोग समझते ही नहीं कि मैंने इतना कुछ आज तक किया है – यह संकल्प करने से कर्म की गति को समझते हैं कि कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म क्या है, वहाँ चलते-चलते हमारी इस समझ में कमी आ जाती है कि त्याग से भाग्य बनता है। हमारे कर्म का फल मल्टीप्लाई हो जाता है, हमारे त्याग की भावना से। लेकिन हम त्याग केवल इसी भावना से नहीं करते। त्याग तो एक वृत्ति विशेष का नाम है। दूसरे को सुखी देखकर सुख महसूस करना ये मनुष्य की लाइफ की क्वालिटी है। कहीं तो ऐसा होता है कि मनुष्य किसी को आगे बढ़ता हुआ देखता है तो ईर्ष्या होती है, कहीं पर ऐसा होता है कि दूसरे को आगे बढ़ता देखकर लोग उसका विरोध भी करते हैं। हमारे इन्स्टीट्युशन के इतिहास में भी यही हुआ - जब हमारी संस्था बढ़ने लगी तो लोग सोचने लगे कि ये हमारे फॉलोअर्स को अपनी संस्था में ले जा रहे हैं तो उन्होंने नुक्स ढूंढ़ना शुरु कर दिया और प्रोपोगन्डा करना शुरु कर दिया, उनके मन में खुशी नहीं हुई हमको बढ़ता हुआ देखकर, तो यह ईर्ष्या है। लेकिन दूसरे को सुखी होता हुआ, बढ़ता हुआ, उन्नति को प्राप्त करता हुआ देखकर मनुष्य सुखी बने, शुभ भावना, शुभ कामना उसके प्रति रखे - यह त्याग की वृत्ति है।

इस त्याग, तपस्या और सेवा का आपस में गहरा सम्बन्ध है। तो जो हम योग की भट्ठी करते हैं या सेवा करते हैं या जो कुछ पुरुषार्थ हम कर रहे हैं उसमें इस बात की चेकिंग अवश्य करनी है कि कहीं हम सुखों की ही तो रसना नहीं लेने लगे हैं? जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, लोग आपको सेवा देंगे, सेवा के साथ आपकी भी सेवा करने लगेंगे – यह समझकर कि ये हमारे से बड़े हैं, वरिष्ठ हैं। पुराने हैं तो आपको भी अनेक प्रकार की सुविधायें प्राप्त होने लगेंगी, सुख-साधन प्राप्त होने लगेंगे। अगर उन उम्मीदों में, उनके भोग में, उनको इकट्ठा करने में चले गये तो जीवन में आलस्य और वैभव के कारण विलासी जीवन हो जायेगा, जीवन में अलबेलापन आ जायेगा फिर 'सेम्पल और सिम्पल' जीवन नहीं रहेगा, त्याग समाप्त हो जायेगा इसकी हम चेकिंग कैसे करें? बाबा के जीवन का आदर्श हमारे सामने है। सबसे पहली प्रतिभा है बाबा के जीवन की - 'त्यागमय जीवन'। कहाँ जवाहरी जीवन, जिसमें सब बातें प्राप्त थी और कहाँ उसके बाद एकदम सिम्पल जीवन। इसका मतलब यह नहीं कि हमको जानबूझ कर हठयोग करना है लेकिन ऐसा भी नहीं कि हम ये सब सुविधायें एक के बाद एक प्राप्त करते जायें।

आजकल साइंस यह कोशिश कर रही है कि और ज़्यादा इन्वेशन होती जाये। मॉडल ही चेंज होते जा रहे हैं। तो जब यह बात जीवन में आ जाती है तो वह उसको यहीं भोग लेता है, उसको कुछ भी प्राप्त नहीं होता। तो योगी जीवन में जो एक बहुत बड़ी परीक्षा आती है चलते-चलते औरों को भी देखकर हम कॉपी करने लग जाते हैं – यह खाता क्या है, सोता कैसे है, पहनता क्या है, इसके आने-जाने के साधन क्या हैं, जब हम इसको कॉपी करने लग जाते हैं तो हमारा योग समाप्त हो जाता है, सेवा का भाव समाप्त हो जाता है, हम सबकुछ यहीं भोग लेते हैं। यहीं कमाया, यहीं खाया, खाली झोली झाड़कर चल पड़े। योग का अपना सुख है, पवित्रता का अपना सुख है, सबसे अपने-अपने सुख हैं। लेकिन जो त्याग से सेवा की जाती है उसकी लज़्ज़त भी अलग प्रकार की है। स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन, अच्छे से अच्छे वैभव भी आपको इतना सुख नहीं दे सकते जो उत्सर्ग और त्याग में हैं।

योगा और.... - पेज 10 का शेष

शक्तिशाली अगर मैं बनूँगा तो योगा भी अच्छा होगा।और जो एक्सरसाइज हम करेंगे उसमें परफेक्शन आयेगी। इसलिए शरीर को सिर्फ आप अच्छी तरह से कष्ट देते हैं, दौड़ते हैं, भागते हैं अलग-अलग तरह से स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज करते हैं, करते रहिए इसमें आपको मना नहीं है। लेकिन इसको करने के बाद भी अगर परिवर्तन नहीं हो रहा है, चेंज नहीं आ रहा है तो इसका मतलब ये हुआ कि मैंने अपने आपको उस कनेक्शन के साथ नहीं जोड़ा जैसा मुझे परिवर्तन चाहिए। तो राजयोग एक ऐसी प्रक्रिया है जो हमारे माइंड की एक-एक चीज़ को चैनेलाइज़ कर देती है, उसको एक श्रृंख्लाबद्ध कर देती है, उसके साथ जब मैं जुड़ जाता हूँ तो मेरे हर कर्म में परफेक्शन आती है। 100 योगा में राजयोग इसलिए भी कारगर है क्योंकि ये परमात्मा के आधार से होगा किसी मनुष्य की सिखाई हुई बात नहीं है। ये परमात्मा द्वारा सिखाया गया एक्युरेट ज्ञान है। जब तक योग में हम राजयोग को शामिल नहीं करेंगे, अपनी इन्द्रियों को विन नहीं करेंगे, संयम नहीं रखेंगे, सादगी नहीं रखेंगे, एक-एक चीज पर काम नहीं करेंगे, तब तक जो हम योग करेंगे, योगा करेंगे उसमें हमको सफलता नहीं मिलने वाली, इस राजयोग को योग में शामिल करिए और अपने आपको शक्तिशाली बनाइये।

उदगीर-महा.। लॉकडाउन के तहत ज़रूरतमंद लोगों के लिए तहसीलदार वेंकटेश मुंडे के द्वारा प्रशासन को खाद्य सामग्री देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. महानंदा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहन।

सूरत वराछा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा 2500 ज़रूरतमंद लोगों को भोजन बांटते हुए ब्र.कु. भाई।

सुनाम-पंजाब। लॉकडाउन के तहत लोगों की सुरक्षा हेतु तैनात ब्र.कु. मीरा ने डी.एस.पी., एस.एच.ओ. और 100 पुलिसकर्मियों सहित सभी को सौगात व प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया। साथ हैं डॉ. नीलम तथा अन्य।

टूंडला-औंवलखेड़ा (उ.प्र.)। कोरोना वायरस की महामारी के चलते लॉकडाउन में कोरोनायोद्धा 112 नम्बर की टीम को ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. तनु।

टूंडला- उ.प्र.। कोरोना वायरस की महामारी के चलते लॉकडाउन में कोरोनायोद्धा पुलिसकर्मियों को ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. विजय बहन।

छपरा-बिहार। लॉकडाउन के चलते प्रवासी मजदूरों को भोजन व पानी की बोतल वितरित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूजा तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहन।

चौमहला-झालावाड़ (राज.)। लॉकडाउन के दौरान पुलिस अधीक्षक कार्यालय में एस.डी.एम. राहुल मल्होत्रा, पुलिस अधिकारी कल्याण सिंह मीणा व अन्य पुलिसकर्मियों को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात चित्र में सभी पुलिसकर्मी और ब्र.कु. गीता बहन।

पीसफैलेस-श्रीनिवास नगर(जयपुर)। शिवरात्रि पर निकाली जाने वाली शोभा यात्रा के दौरान एडिशनल एस.पी. बजरंग सिंह शेखावत को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा। साथ हैं ब्र.कु. मदनलाल शर्मा तथा अन्य।